



“प्रेम”

- मेरा मन लोचै गुर दरखन ताई । बिलप करे चात्रिक की निआई । त्रिखान उतरै साति न आवै बिन दरखन सतं पिआरे जीउ ।

अर्थ:- गुरु का दर्शन करने के लिए मेरा मन बड़ी तमन्ना कर रहा है जैसे पपीहा स्वाति बूंद के लिए तड़पता है पपीहे की तरह मेरा मन गुरु के दर्शनों के लिए तड़प रहा है । प्यारे सतं - गुरु के दर्शन के बिना दर्शनों की मेरी आत्मिक प्यास तृप्त नहीं होती । मेरे मन को धैर्य नहीं आता ।

• हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ।

अर्थ:- मैं पिआरे संत - गुरु के दर्शन से कुर्बान हूँ, सदके हूँ ।

• तेरा मुख सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी । चिर होआ देखे सारिंगपाणी । थनं सु देस जहां तूं वसिआ मेरे सज्जन मीत मुरारे जीउ ।

अर्थ:- हे धर्नुधारी प्रभु जी ! तेरा मुख तेरे मुहं का दर्शन सुख देने वाला है ठण्डक देने वाला है तेरी महिमा मेरे अंदर आत्मिक अडोलता की लहर पैदा करती है । हे धर्नुधारी ! तेरे दर्शन किए काफी समय हो चुका है । हे मेरे सज्जन प्रभु ! वह हृदय देश भाग्यशाली है जिसमें तू सदा बसता है ।

• हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सज्जन मीत मुरारे जीउ ।

अर्थ:- हे मेरे सज्जन गुरु ! हे मेरे मित्र प्रभु ! मैं तेरे पर कुर्बान हूँ, सदके हूँ ।

इक घड़ी न मिलते ता कलिजुग होता । हुणि कदि मिलीऐ प्रिआ तुथ भगवंता । मोहि रैणि न बिहावै नीद न आवै बिन देखे गुर दरबारे जीउ ।

अर्थ:- हे प्यारे भगवान ! जब मैं तुझे एक घड़ी भर भी नहीं मिलता तो मुझे जैसे कलियुग सा प्रतीत होने लगता है मैं तेरे विश्वोङ्गे में विहवल हूँ, बताओ अब मैं आपको कब मिल सकूँगा । हे भाई ! गुरु की शरण के बिना परमात्मा से मिलाप नहीं हो सकता, तभी तो गुरु के दरबार का दर्शन करने के बिना मेरी जिंदगी की रात आसान नहीं गुजरती, मेरे अंदर शाति नहीं आती ।

• हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ।

अर्थ:- मैं गुरु के दरबार से सदके हूँ कुर्बान हूँ जो सदैव अटल रहने वाला है ।

• भाग होआ गुरि संत मिलाइआ । प्रभ अविनाशी घर महि पाइआ । सेव करी पल चसा न विछड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ।

अर्थ:- मेरे भाग्य जाग पड़े हैं, गुरु ने मुझे शाति का स्रोत परमात्मा मिला दिया है गुरु की कृपा से उस अविनाशी प्रभु को मैंने अपने हृदय में ढूँढ़ लिया है । हे दास नानक ! कह हे प्रभु ! मेरहर कर मैं तेरे दासों की नित्य सेवा करता रहूँ, तेरे दासों से मैं एक पल भर भी ना बिछड़ जाऊँ, एक रक्ती भर भी ना अलग होऊ ।

• हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ।

(5-96-97)

अर्थ:- हे दास नानक ! कह हे प्रभु ! मैं तेरे दासों से सदके हूँ कुर्बान हूँ ।

• जो सिर साई ना निवै सो सिर दीजै डारि । नानक जिस पिंजर महि बिरहा नहीं सो पिंजर लै जारि ।

(2-89)

अर्थ:- जो सिर प्रभु की याद में ना छूके, वह त्याग देने योग्य है भाव, उसका कोई गुण नहीं । हे नानक ! जिस शरीर में प्यार नहीं वह शरीर जला दो भाव, वह भी व्यर्थ है ।

• मितर पिआरे नूं - हाल मुरीदां दा कहिणा । तुथ बिन रोग रजाईआं दा ओडन नाम - नाग निवासां दे रहणा ।

अर्थ:- किसी मित्र को बताना कि आप कैसे हैं । तुम्हारे बिना हमारे लिए अमीर कंबल का उपयोग एक बीमारी की तरह है और घर का आराम सांपों के साथ रहने की तरह है ।

सूल सुराही खंजर पिआला - बिंग कसाईयां दा सहणा ।  
यारडे दा सानूं सथर चंगा - भठ खेड़िआ दा रहणा । (1-6-10)

अर्थ:- हमारे पानी के घड़े यातना के खंभों की तरह हैं और हमारे प्यालों की धार खंजर की तरह है । आपकी उपेक्षा कसाईयों के हाथों जानवरों की पीड़ा की तरह है । हमारे प्रिय प्रभु का फूस का बिस्तर हमें महँगे भट्टी जैसे भवनों में रहने से अधिक प्रिय है ।

• काली कोयल - तू कित गुन काली । अपने प्रीतम के हउ - बिरहे जाली । (फरीद-794)

अर्थ:- अब मैं कोयल को पूछती फिरती हूँ, हे काली कोयल ! भला, मैं तो अपने कर्मों की मारी दुखी जली सड़ी हुई हूँ तू भी क्यों काली हो गई है ? कोयल भी यही उत्तर देती है मुझे मेरे प्रीतम के विद्वोड़े ने जला डाला है ।

• कबीर - हसना दूर कर रोवे से कर चीत । बिन रोये धर्म पाइये प्रेम प्यारा मीत ।

अर्थ:- कबीर कहते हैं कि हँसी - मज़ाक छोड़कर, अपने मन को सच्चे आँखुओं भक्ति के आँखू से जोड़ो । बिना रोए अर्थात् बिना विज्ञप्ता और तङ्गप के, केवल धर्म - कर्म तो पाए जा सकते हैं, लेकिन प्यारे प्रेमी ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती ।

हस हस कंत न पाया जिन पाया तिन रोय । होंसी खेले  
पिया मिले तो कौन दुहागन होय ।

अर्थ:- हँसी - ठिठोली करके या सांसारिक सुखों में खोकर प्रियतम नहीं मिलता । जो प्रियतम को प्राप्त करता है, वह दुखों और कष्टों से गुजरता है । यदि हँसी-खुशी और खेल में ही ईश्वर मिल जाता, तो कोई भी 'विरहिणी' प्रेम में तड़पती आत्मा ना होती । फिर सबको ईश्वर मिल गया होता ।

सुखिया सब संसार है खाते और सोवे । दुखिया दास कबीर है जागे और रोवे । (कबीर)

अर्थ:- संसार में सभी लोग सुख में हैं, वे खाते और सोते हैं । लेकिन कबीर का दास, जो जागता है और रोता है, वह दुखी है ।

• वैद बुलाइआ वैदगी पकड़ ढंडोले बांह । भोला वैद न जाणइ करक कलेजे माहि ।

अर्थ:- हकीम मरीज को दवाई देने के लिए बुलाया जाता है, वह मरीज की बाँह पकड़ के नाड़ी टटोलता है और मर्ज तलाशने का प्रयत्न करता है, पर अंजान हकीम यह नहीं जानता कि प्रभु से विघ्नोङे की पीड़ा बिरही बंदों के दिल में हुआ करती है ।

वैदा वैद सुवैद तू पहिला रोग पथाण । ऐसा दारु लोड लहु जित वजै रोगा धाणि ।

अर्थ:- हे भाई ! पहले अपना ही आत्मिक रोग ढूँढ़ और उसकी ऐसी दवाई तलाश ले जिससे सारे आत्मिक रोग दूर हो जाएं जिस दवाई से सारे रोग उठाए जा सकें और शरीर में सुख आ बसे ।

जित दारु रोग उठिअहि तनि सुख वसै आई । रोग गवाइहि  
आपणा त नानक वैद सदाइ ।

(1-1279)

अर्थः- जिस द्वार्द से सारे रोग उठाए जा सकें और शरीर में सुख आ बसे, हे भाई ! तब ही तू हकीमों का हकीम है सबसे बढ़िया हकीम है तब ही तू समझदार वैद कहलवा सकता है । हे नानक ! कह हे भाई ! अगर तू पहले अपना रोग दूर कर ले तो अपने आप को हकीम कहलवा कहलवाने का हकदार है ।

• नाती धोती सबंही सुती आइ नचिंद । फरीदा रही सु बेड़ी हिन्न  
दी गई कथूरी गंध ।

अर्थः- जो जीव स्त्री नहा - धो के पति मिलने की आस में तैयार बैठी हो, पर फिर वे फिकर हो के सो गई, हे फरीद ! उसकी कस्तूरी वाली सुगथि तो उङ्ग गई, वह हींग की बदबू से भरी रह गई भाव, जो बाहरी धार्मिक साधन कर लिए पर सिमरन से टूटे रहे तो भले गुण सब दूर हो जाते हैं और पल्ले अवगुण ही रह जाते हैं ।

जोबन जादे न डरां जे सह प्रीति न जाइ । फरीदा किती  
जोबन प्रीति बिन सुकि गए कुमलाइ ।

अर्थः- अगर पति प्रभू के साथ मेरी प्रीति ना टूटे तो मेरी जवानी के गुजर जाने का डर नहीं है । हे फरीद ! प्रभू की प्रीति से वचित कितने ही जोबन कुमला के सूख गए भाव, अगर प्रभू - चरनों के साथ प्यार नहीं बना तो मनुष्य जीवन का जोबन व्यर्थ ही गया ।

फरीदा चिंत खटोला वाण दुख बिरहि विश्वावण लेफ । ऐहु  
हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेख ।

अर्थः- हे फरीद ! प्रभू की याद भुला के चिंता हमारी घोटी सी खाट बनी हुई है, दुख उस चारपाई का वाण है जिससे चारपाई बुनी हुई है और विश्वें के कारण दुख की तुलाई और लेफ है । हे सच्चे मालिक ! देख, तुझसे विद्युत के यह है हमारा जीवन का हाल ।

**बिरहा - बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतान । फरीदा जित तनि बिरहु न उपजै सो तज जाण मसान ।** (1379)

अर्थः- हर कोई कहता है हाय ! विश्वें बुरा हाय ! विश्वें बुरा । पर हे विश्वें ! तू बादशाह है भाव, तुझे मैं सलाम करता हूँ क्योंकि, हे फरीद ! जिस शरीर में विश्वें का दर्द नहीं पैदा होता भाव, जिस मनुष्य को कभी ये चुभन नहीं लगी कि मैं प्रभु से विद्युत आ हुआ हूँ उस शरीर को मसाण समझो भाव, उस शरीर में रहने वाली रुह विकारों में जल रही है ।

• **फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिआं नई वहन्हि । जो जो वंजैं डीहड़ा सो उमर हथ पवनि ।**

अर्थः- ये शरीर बेचारा भी क्या करे ? इसको लुभाने के लिए चार - चुफेरे जगत में हे फरीद ! परमात्मा की पकी हुई खजूरें दिख रही हैं, और शहद की नदियां बह रही हैं भाव, हर तरफ सुंदर - सुंदर, स्वादिष्ट और मन - मोहक पदार्थ और विशे - विकार मौजूद हैं । वैसे यह भी ठीक है कि इन पदार्थों को भोगने में मनुष्य का जो - जो दिन बीतता है, वह इसकी उम्र को ही हाथ डाल रहे हैं भाव, व्यर्थ में गवा रहे हैं ।

**फरीदा तन सुका पिंजर थीआं तलीआं खूंडहि काग । अजै सु रब न बाहुङ्गिओ देख बदे के भाग ।**

अर्थः- हे फरीद ! यह भौंका शरीर विशे - विकारों में पड़ कर बहुत जर्जर हो गया है, पिंजर बन के रह गया है । फिर भी ये कौए इसकी तलियों पर टूँगे मारे जा रहे हैं भाव, दुनियावी पदार्थों के चरके और विशे -

विकार इसके मन को चुभोएं जा रहे हैं । देखो विकारों में पड़े मनुष्य की किस्मत भी अजीब है कि अभी भी जबकि इसका शरीर दुनिया के विशे भोग - भोग के अपनी सत्ता भी गवा बैठा है रब इस पर प्रसन्न नहीं हुआ भाव, इसकी झाक खत्म नहीं हुई ।

कागा करंग ढढोलिआ सगला खाइआ मास । ऐ दुई नैना  
मति छुहउ पिर देखन की आस ।

अर्थ:- कौओं ने पिंजर भी फरोल मारा है और सारा मास खालिया है भाव, दुनियावी पदार्थों के चर्के और विशे - विकार इस अति - कमजोर हुए शरीर को भी चुभन लगाए जा रहे हैं, इस भौंके शरीर की सारी ताकत इन्होंने खींच ली है । रब कर के कोई विकार मेरी इन दोनों आँखों को ना छेड़े, इनमें तो प्यारे प्रभू को देखने की चाहत टिकी रहे ।

कागा चूडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि । जित पिंजरै मेरा  
सह बसै मास न तिद खाहि । (फरीद-1382)

अर्थ:- हे कौए ! मेरे पिंजर मैं टूँगे ना मार, अगर तेरे वश मैं ये बात है तो यहाँ से उड़ जा, जिस शरीर मैं मेरा पति - प्रभु बस रहा है, इसमें से मास ना खा भाव, हे विषयों के चर्के ! मेरे इस शरीर को चोंच मारनी छोड़ दे, तरस कर, और जा खलासी कर । इस शरीर मैं तो पति - प्रभु का प्यार बस रहा है, तू इसको विशे - भोगों की तरफ प्रेरने का प्रयत्न ना कर ।

• कोई आखै भूतना को कहै बैताला । कोई आखै आदमी नानक वेचारा । भइआ दिवाना साह का नानक बउराना ।

(991)

अर्थ:- कोई कहता है कि नानक तो कोई भूत है क्योंकि ये लोगों से दूर रहता है कोई कहता है कि नानक कोई जिन्ह है जो लोगों से परे - परे जूह - उजाड़ मैं बहुत ज्यादा समय टिका रहता है पर कोई बंदा कहता

है नहीं नानक है तो हमारे जैसा आदमी ही वैसे है निमाणा सा जब मनुष्य एक परमात्मा के बिना किसी और को नहीं पहचानता किसी और की खुशामद मुथाजगी नहीं करता जब वह दुनिया के डरों - फिक्रों से बेपरवाह हो जाता है, तब दुनिया के लोगों की नजरों में वह झल्ला समझा जाता है ।

• सचै थानि वसै निरंकारा । आपि पश्चाणै सबद वीचारा । सचै महिल निवास निरंतरि आवण जाण चुकाइआ । ना मन चलै न पउण उडावै । जोगी सबद अजाहूद वावै । पंच सबद झुणकार निरालम प्रभि आपे वाइ सुणाइआ ।

अर्थः- वह परमात्मा जिसका कोई विशेष रूप नहीं बताया जा सकता एक ऐसी जगह पर विराजमान है जो हमेशा कायम रहने वाली है । वह आप ही अपने आप को विचारता है और स्वयं ही समझता है । जिस जीव ने उस सदा - स्थिर प्रभू के चरणों महल में अपना ठिकाना सदा के लिए बना लिया भाव, जो मनुष्य सदा उसकी याद में जुड़ा रहता है परमात्मा उसके पैदा होने मरने के चक्करों को समाप्त कर देता है ।

हउमै मेट सबद सुख होई । आप वीचारे गिआनी सोई । नानक हरि जस हरि गुण लाहा सतसंगत सच फल पाइआ ।

(1-1040)

अर्थः- वह जो मनुष्य अपने आत्मिक जीवन को पड़तालता रहता है वहीं असल ज्ञानवान है, वह मनुष्य अहंकार को दूर करके गुरु के शब्द में जुड़ता है और इस तरह उसको आत्मिक आनंद प्राप्त होता है । हे नानक ! परमात्मा की सिफत - सलाह करनी परमात्मा के गुण गाने जगत में यही असल कर्माई है । जो मनुष्य साध - संगति में आता है वह यह सदा कायम रहने वाला फल पा लेता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

»»» हक <<< ◇ >>> हक <<< ◇ >>> हक <<<

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

### एक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरु-सतगुरु-शब्द-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषों का केवल और केवल एक ही अर्थ विशेष है कि - “रागमई प्रकाशित सुगथित आवाज विशेष” । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरुमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

“सबद गुरु - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।”